सम्मग्ग-चिंतणं

[सन्मार्ग-चिंतन]

लेखक :

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी

:: प्रकाशक ::

समर्पण समूह, भारत

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा	:	शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी यतिराज
कृति	:	सम्मग्ग-चिंतणं (सन्मार्ग-चिंतन)
कृतिकार	:	श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी
संपादन	:	श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी
संस्करण	:	प्रथम, 1500 प्रतियाँ
प्रकाशन	:	समर्पण समूह, भारत

एवं प्राप्ति स्थान	:	जबलपुर	–	98276-07171	मुद्रण	:	अंकित जैन शास्त्री
		इन्दौर	–	98260-10104			मड़देवरा
		इन्दौर	–	94253-16840			सागर (मध्य प्रदेश)
		भीलवाड़ा	–	63766-49881			फोन : 8302070717
		भोपाल	–	91790-50222			मो. : 9755286521

शुभाशीष

जगति पर महाभाग्यशाली जीव ही सन्मार्ग का सत्यार्थ बोध करानेवाला वस्तु के वस्तुत्व का चिन्तवन कर पाता है। **भाग्यहीन पुण्यक्षीण जीव सम्यक् विचार नहीं कर पाते; उनका चिन्तवन विपरीत ही विपरीत चलता है।** अपने चिन्तवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये सद् साहित्य जिनागम का सतत स्वाध्याय करना चाहिये और समीचीन तत्त्वोपदेशक गुरुजनों के धर्मोपदेश को सुनना चाहिये, जो कि सम्प्रदायातीत हो।

प्राणीमात्र का चिन्तवन सन्मार्ग का चले, इसी भावना से युक्त होकर **श्रुताराधक श्रमण मुनि श्री अप्रमित सागर जी ने ''सन्मार्ग चिन्तन''** नामक कृति का सृजन कर श्रुत का संवर्धन कर प्रशंसनीय कार्य किया है। आप इसी प्रकार से श्रुताराधना करते रहें। यही शुभाशीष है।

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

02/4/2024 **दिगंबराचार्य विशुद्धसागर जी**

कोपरगाँव, महाराष्ट्र (भारत)

सन्मार्ग-भावना

सन्मार्ग की चाह प्रत्येक प्राणी को है, मगर तत्संबंधी पुरुषार्थ और चिंतन के अभाव में प्राणी सन्मार्ग को प्राप्त नहीं कर पा रहा है। **सन्मार्ग पर चलना पुरुषार्थ साध्य है, किन्तु असाध्य नहीं है।**

इसी सदुद्देश्य को लेकर **ममानुज श्रुतश्रमी प्राकृतविद् श्रुतप्रिय श्रमणरत्न श्री अप्रमित सागर जी ने स्वश्रुतसाधना, स्वानुभव और गुरुपरंपरा से प्राप्त ज्ञान के माध्यम से सन्मार्ग की प्राप्ति के साधन भूत 'सम्मग्ग-चिंतणं' नामक कृति का मौलिकरूप से सृजन किया।**

इस कृति के संपादन के पश्चात् मैंने यह अनुभव किया है कि—यह '**सन्मार्ग-चिंतन**' नामक कृति भव्यजनों के लिये आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पाथेय अवश्य सिद्ध होगी। पूज्यवर इसी प्रकार नवीन-नवीन नवनीत जिनवाङ्मय को प्रदान करते रहें। **यही अप्रमित मंगलभावना।**

॥ णमो णमो सिद्धसाहूणं ॥

4/4/24 **विशुद्धपदाकांक्षी**

वल्लभबाड़ी, कोटा, राजस्थान, भारत **श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर**

मेरा सन्मार्ग

जीवन की दिशा और दशा को बदलने के लिये संसार की समस्त भव्यात्मायें प्रयासरत हैं; कुछ असमीचीन मार्ग का आश्रय लेकर बिखर जाते हैं, तो कुछ समीचीन मार्ग का आश्रय लेकर निखर जाते हैं।

जीवन की दिशा और दशा बदलने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुये मैंने यह **''सन्मार्ग-चिंतन''** नामक कृति का सृजन किया है।

इस लघुकाय बहुप्रमेययुक्त कृति को **मेरे आराध्य गुरुदेव शताब्दी देशनाचार्य विशुद्धसागर जी यतिराज का आशीर्वाद संप्राप्त है। मेरे अग्रज प्राकृतप्रवीण प्राकृत विद्याव्यसनी बहु प्रतिभा के धनी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी महाराज ने** संपादन कर इस कृति को अनुपमता प्रदान की है।

आशा करता हूँ कि—आप सभी पाठकगण इस कृति को चिंतन, मनन और मंथन करके अपना मार्ग प्रशस्त करेंगे।

॥ विशुद्धात्मने नमः ॥

24 मार्च 2024
ग्रीष्मकालीनवाचना
आर.के. पुरम कोटा, राजस्थान (भारत)

विशुद्धगुणाकांक्षी
श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर

मंगलाचरणं

(अनुष्टुप् छन्द)

सम्मदभाव-जुत्तेणं, सम्मदिं पणमामि हं।
विसुद्धभाव-लाहट्ठं, वोच्छं सम्मग्ग-चिंतणं॥

अर्थ—अति हर्ष भावों से युक्त होकर मैं (श्रुतप्रिय अप्रमितसागर) श्री 1008 सन्मति भगवान् अर्थात् महावीर स्वामी को नमस्कार करता हूँ और विशुद्ध भावों की प्राप्ति हेतु ''**सन्मार्ग-चिन्तन**'' नामक दिव्य ग्रन्थ को कहता हूँ।।

सन्मार्ग चिंतन-1

❖ **जो बोहेदि कुण आददंसणं, सो चेव सम्मग्गदरिसगो॥**

❖ सन्मार्ग दर्शक वही है, जो कराये बोध कि—करो आत्मदर्शन।

सन्मार्ग चिंतन-2

❖ **अहिरुइ-जीवणं हि सोगस्स जीवणं॥**

❖ शौक का जीवन ही है, शोक का जीवन।

सन्मार्ग चिंतन-3

❖ **अवरे सग-अत्थित्त-गवेसणं हि तुम्हाण महा-तुडी॥**

❖ पर में अपना अस्तित्व खोजना ही तुम्हारी महान् भूल है।

सन्मार्ग चिंतन-4

❖ **सो चेव तरेदि भवादु, जो लेदि गुरु-पहु-सरणं॥**

❖ वही होता है भव से पार, जो लेता है गुरु और प्रभु की शरण।

सन्मार्ग चिंतन-5

❖ **सगसत्ति-गोवणं सगेण सह छलं॥**

❖ अपनी शक्ति को छुपाना स्वयं के साथ छलावा करना है।

सन्मार्ग चिंतन-6

❖ **'मए किदो', अयं भावो हि बुड्डेसि तुमे भवे॥**

❖ 'मैंने किया', यह भाव ही ले डूबता है भव में तुझे।

सन्मार्ग चिंतन-7

- ❖ **भव-अभावो कुभाव-अभावेणं हि, कुण अभावं॥**
- ❖ संसार का अभाव होगा कुभावों के अभाव से, कर अभाव।

सन्मार्ग चिंतन-8

- ❖ **आकंखावड्डीए खलु भववड्डी॥**
- ❖ आकांक्षाओं की वृद्धि से ही होती संसार की वृद्धि।

सन्मार्ग चिंतन-9

❖ **तुम्हाणं सगपरिणामा हि किलेस-कारणं॥**

❖ क्लेश का कारण कोई और नहीं आपके स्वयं के परिणाम हैं।

सन्मार्ग चिंतन-10

❖ **तत्तो बीहेहि जं दुक्खकारणं, जेण तुमं धम्मं करेहि॥**

❖ डरो उससे जो दुःख का कारण है, जिससे तुम धर्म कर सको।

सन्मार्ग चिंतन-11

❖ **कज्जपुत्तीए लोयम्हि णवि देदि कोवि सहजोगं॥**

❖ काम निकल जाने पर दुनिया में कोई भी साथ नहीं देता।

सन्मार्ग चिंतन-12

❖ **तुम्हाण साफल्ल-पहाणकारणं तुम्हाण वीसासो एव॥**

❖ आपकी सफलता का प्रधान कारण आपका विश्वास ही है।

सन्मार्ग चिंतन-13

❖ **कुण णियदिट्ठिं 'को हं', ण दु 'वयं तुम्हाण को'॥**

❖ 'हम आपके हैं कौन' पर नहीं, अपनी दृष्टि 'मैं कौन हूँ' पर ले जाओ।

सन्मार्ग चिंतन-14

❖ **अवरणाणादु णवि होदि तुमं णाणं, जाण इदमेव सम्मणाणं॥**

❖ पर के ज्ञान से नहीं होता तुझे ज्ञान, जान यही है सम्यक् ज्ञान।

सन्मार्ग चिंतन-15

- **'हं जाणेमु तं', तेणेव विसरीअ तुमं, जाणिज्जा कं तुमं॥**
- 'मैं जानूँ उसे' इसके कारण ही भूल गया तू कि जानना चाहिये किसे तुझे।

सन्मार्ग चिंतन-16

- **णिरवेक्खभत्ती हि देदि णिरवेक्खसुहं॥**
- निरपेक्ष-भक्ति ही दिलाती है निरपेक्ष-सुख।

सन्मार्ग चिंतन-17

❖ **अवर-अहिणाणं करंतं जीवो होइ, णियादु दूरो॥**

❖ पर से पहचान करते-करते हुआ है, जीव निज से ही दूर।

सन्मार्ग चिंतन-18

❖ **पक्खातीद-साहणा खु सुपहो पहं॥**

❖ पक्ष रहित साधना ही बनाती है पथ को सुपथ।

सन्मार्ग चिंतन-19

- **अणुयरेहि जहाअत्त, ण दु जहाअप्प एवं तरेहि भवादु॥**
- अपने अनुसार नहीं, आप्त के अनुसार चलो और भव से पार चलो।

सन्मार्ग चिंतन-20

- **मा कुण वंछं, अहं किं फलं लहिज्जा, वीसासं धार, तुमं लहिज्जा फलं॥**
- मत कर इच्छा कि क्या फल मिलेगा मुझे, विश्वास रख फल मिलेगा तुझे।

सन्मार्ग चिंतन-21

❖ **लुक्किदूण किदं किच्चं कस्सचिदवि कदावि ण लुक्केदि॥**

❖ छिपकर किया गया कृत्य किसी का भी कभी छिपता नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-22

❖ **एरिसं पहावं कुव्वेहि जो उम्मज्जणे वि ण छुट्टेहि॥**

❖ छाप बनाओ ऐसी कि छुटाने पर भी न छूटे।

सन्मार्ग चिंतन-23

- **सग-काले हि होहिदि सहावुवलद्धी, कुण सुकज्जं॥**
- स्वकाल में ही होगी स्वभाव की उपलब्धि, कर सुकार्य।

सन्मार्ग चिंतन-24

- **सव्वाणि कज्जाणि सरलाणि, अम्हे ताणि असरलाणि करेमो॥**
- कार्य सभी सरल होते हैं, हम उन्हें कठिन बना लेते हैं।

सन्मार्ग चिंतन-25

❖ **तस्सेव विवेगो जग्गेहिदि, जो जग्गंतो जीवणं जीवेदि॥**

❖ विवेक उसी का जाग्रत होगा, जो जागते हुए जीवन जीता है।

सन्मार्ग चिंतन-26

❖ **वरं अहवा अवरं, वीसे णामं तुम्हाण कज्जेणं होहिदि॥**

❖ अच्छा हो या बुरा, नाम दुनिया में तुम्हारे ही काम से होगा।

सन्मार्ग चिंतन-27

- **अणेग-पच्छादो एयं णवि जाणेहि, तम्हा दु होदि पुणो भवे आगमणं॥**
- अनेकों के पीछे एक को नहीं जाना, इसलिए तो हुआ पुनः भव में आना।

सन्मार्ग चिंतन-28

- **वंछादो दु बुभुक्खा वि ण णस्सेदि, पुण संसारो किं णस्सेहिदि?**
- चाहने से तो भूख भी नहीं मिटी, संसार क्या मिटेगा?

सन्मार्ग चिंतन-29

❖ **साफल्लं हि इच्छेसि, दु सगमेव विजयेहि॥**

❖ जीतना ही चाहते हो, तो जीतो स्वयं को ही।

सन्मार्ग चिंतन-30

❖ **जीवणे महत्तदा ताइं कज्जाइं देहि, जाइं तुम्हाण महत्तं वड्ढेहि॥**

❖ जीवन में महत्त्वता उन कार्यों को दीजिये, जो आपका महत्त्व बढ़ायें।

सन्मार्ग चिंतन-31

- **अप्प-अवगुणाणं संसोहणेणं अब्भुद्धरेहिदि णेव अण्णस्स॥**
- पर के नहीं स्वयं के अवगुणों के सुधार से होगा उद्धार।

सन्मार्ग चिंतन-32

- **असीम-इच्छाओ कारेह, तुमं असीम-सुहत्तो पुहं॥**
- असीम इच्छाएँ कराती हैं, तुझे असीम सुख से दूर।

सन्मार्ग चिंतन-33

❖ **तुमं जो वि करीअ, करेसि य करेहिसि, सव्वं णियत्थं॥**

❖ आप ने जो भी किया है, कर रहे हो और करोगे सब स्वयं के लिये।

सन्मार्ग चिंतन-34

❖ **तस्स णाणं सारल्लं सद्देसुं, जो जाणेदि सद्दा॥**

❖ आसान है शब्दों में जानना उसे, जो जान रहा है शब्दों को।

सन्मार्ग चिंतन-35

- **मा दिंत दोसं कम्माइं, जं लहेसि तं तुम्हाण भावफलं॥**
- मत दो दोष कर्मों को, जो मिला है वह तेरे ही भावों का फल है।

सन्मार्ग चिंतन-36

- **णासवंत-वीसं पस्सिदूणं विणस्संति अण्णाणी, सुरक्खेंति णाणी॥**
- मिटती दुनिया को देखकर मिटते हैं अज्ञानी, सँभलते हैं ज्ञानी।

सन्मार्ग चिंतन-37

❖ **इट्ठ-आराहणा अणिट्ठं णस्सेदि॥**

❖ इष्ट की आराधना अनिष्ट को विलीन कर देती है।

सन्मार्ग चिंतन-38

❖ **जीवण-विगासट्ठं आवस्सगो विवेग-धेज्ज-वीसासो य॥**

❖ जीवन के विकास के लिये आवश्यक है विवेक धैर्य और विश्वास।

सन्मार्ग चिंतन-39

- **सव्वं गेण्हेहि, किण्णु मा मण्ण कंचिदवि सगीयो॥**
- अपनाओ सभी को, पर किसी को भी अपना मत मानो।

सन्मार्ग चिंतन-40

- **अवरे णियत्त-भावणा एव दुक्खाणि देदि॥**
- पर में अपनत्व की भावना ही करती है दुःखों को प्रदान।

सन्मार्ग चिंतन-41

❖ **अम्हे जदा वि जयेहिमो दु सगस्स वीसासादो हि, तं जग्गेहि॥**

❖ हम जब भी जीतेंगे तो स्वयं के ही विश्वास से, जगाओ उसे।

सन्मार्ग चिंतन-42

❖ **अण्णस्स अहं णेव कत्ता-हत्ता य, एवमेव भावो भवं हरेदि॥**

❖ मैं कर्त्ता नहीं हर्त्ता नहीं पर का, यही भाव भवहरण करता है।

सन्मार्ग चिंतन-43

❖ **जीवणे पणो हि तुम्हाण पाणा, तं मा मुंचेहि॥**

❖ जीवन में प्रण ही तुम्हारे प्राण हैं, मत छोड़ना उसे।

सन्मार्ग चिंतन-44

❖ **कित्तियं कज्जं हि कुणेहि वीसस्स, किण्णु लहेज्जा किंचिवि णत्थि॥**

❖ कितना ही काम कर लो दुनिया के लिये, पर मिलेगा कुछ भी नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-45

❖ **जावदु जणेहिं जुंजेहिसि, तावदु हि सगत्तो दूरेहिसि॥**

❖ जितना लोगों से जुड़ोगे उतना ही स्वयं से दूर होओगे।

सन्मार्ग चिंतन-46

❖ **सया एवमेव पयासं कुण—तुम्हादु णिमित्तादु कोवि दुही णो होदु॥**

❖ हमेशा यही प्रयास करो कि आपके कारण कोई भी दुःखी न हो।

सन्मार्ग चिंतन-47

- **अम्हाण साफल्लदा अम्हाण हि हत्थेसुं॥**
- हमारी सफलता हमारे ही हाथों में होती है।

सन्मार्ग चिंतन-48

- **तुमं केणचिदवि अणुदाणकामणं करेसि, पुण अणुदाण-करणं पि सुसिक्ख॥**
- आप किसी से मदद की कामना रखते हो तो मदद करना भी सीखो।

सन्मार्ग चिंतन-49

❖ **तुम्हाण इच्छासत्ती दिढा, दु कज्जं अवस्सं समावेहिदि॥**

❖ आपकी इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो कार्य जरूर पूर्ण होगा।

सन्मार्ग चिंतन-50

❖ **जीवेहिं ईसाए अवेक्खा, तुमं ईसा-भावाणं उवेक्ख॥**

❖ लोगों से ईर्ष्या करने की अपेक्षा आप ईर्ष्या भावों की उपेक्षा करें।

सन्मार्ग चिंतन-51

- **अइ-मुल्लं जीवणं, इदं विहा हि मा खयेहि॥**
- जीवन बहुत महँगा है इसे ऐसे ही व्यर्थ मत खो देना।

सन्मार्ग चिंतन-52

- **आदविगासट्ठं हुव विसएसुं दुब्बलो॥**
- आत्मविकास के लिये विषयों में कमज़ोर बन जाओ।

सन्मार्ग चिंतन-53

❖ **साहणा-सत्ती तुब्भम्हि दु तं णवि गुहेसु॥**

❖ साधना करने की शक्ति आपमें हो तो उसे छिपाना नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-54

❖ **मण्णेहि जिणवरस्स वयणाणि, णेव अण्णस्स॥**

❖ बातें जिनवर की ही मानना, अन्य की नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-55

❖ **तमेव वियारेदु जेण भावेसुं सुइत्त-पहावो होदु॥**

❖ सोचो वही जिससे भावों में शुचिता का प्रवाह हो।

सन्मार्ग चिंतन-56

❖ **उच्च-उड्डुयणत्थं उच्चभावं कुणेहि॥**

❖ ऊँची उड़ान भरना है तो ऊँचे भाव बनाओ।

सन्मार्ग चिंतन-57

❖ **भूद-किदं तु वड्ढमाणे भुंजेहि एवं वड्ढमाणे करेहिसि दु भविस्से भुंजेहिसि॥**

❖ कल किया था तो आज भोग रहे हो और आज करोगे तो कल भोगोगे।

सन्मार्ग चिंतन-58

❖ **अज्जपज्जंतं जीवेसि अवरस्स, अदु जीवेहि सगस्स॥**

❖ आज तक जीते आये हो पर के लिये, अब जीओ स्वयं के लिये।

सन्मार्ग चिंतन-59

❖ **तुवं अणुदाणं तु कुणेसि, किण्णु सगीयं ण मण्णित्तु, तम्हा दु अहिमाणो आगच्छेसि॥**

❖ आप मदद तो करते हो पर अपना मानकर नहीं, इसीलिये तो मद आ जाता है।

सन्मार्ग चिंतन-60

❖ **तुम्हाण किच्चं तुमए सह एवं अवराणं किच्चं अवरेहिं सह हि गच्छेदि, ण दु अण्णेण सह॥**

❖ आपका किया हुआ आपके साथ और दूसरों का दूसरों के साथ ही जाता है, किसी और के साथ नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-61

- **परिपुण्ण-हवणट्ठं पुण्णणाणं होदव्वं॥**
- परिपूर्ण बनने के लिये पूर्णज्ञान चाहिये।

सन्मार्ग चिंतन-62

- **अवर-दोसाणं उब्भावणं किच्चा मा कुव्व कम्मबंधं॥**
- दूसरों के दोषों का डिंढ़ोरा पिटवाकर मत करो कर्मों का बंध।

सन्मार्ग चिंतन-63

❖ **कुण मज्जणं सग-अवगुणाणं, तु होहिदि सदो हि धम्मज्जणं॥**

❖ करो मार्जन स्व-अवगुणों का, होगा स्वतः ही धर्म का अर्जन।

सन्मार्ग चिंतन-64

❖ **अप्पंगणाए मुद्धवंतो हि होदि पुण्णमुत्तो॥**

❖ आत्म-अंगना में मुग्ध होनेवाला ही होता है पूर्ण मुक्त।

सन्मार्ग चिंतन-65

❖ **गेहं चयित्तु वि किदं जदि विवादं, तु जाणेहि होदि जीवणणट्ठं॥**

❖ घर छोड़कर भी किया यदि विवाद, तो समझना जीवन हुआ बर्बाद।

सन्मार्ग चिंतन-66

❖ **खलिदं पस्सित्तु संभलेहि, दु तुमं वरेण्णो॥**

❖ ठोकर खानेवाले को देखकर सँभल गये, तो आप महान् हो।

सन्मार्ग चिंतन-67

- ❖ **तुम्हाण खलदिट्ठी खलु तुम्हाण भवं दूसेदि॥**
- ❖ आपकी खोटी नज़र ही आपका भव खोटा करती है।

सन्मार्ग चिंतन-68

- ❖ **अवरेहिं संमिलण-अवेक्खाए तुमं सयेणं मिल्लेहि दु तरहिसि॥**
- ❖ दूसरों से मिलने की अपेक्षा आप स्वयं से मिलो तो तर जाओगे।

सन्मार्ग चिंतन-69

❖ **वीसे सव्वुक्किट्ठ-महत्तपुण्ण-वत्थुं समयो त्थि॥**

❖ सबसे कीमती जगत् में कोई है तो वह है समय।

सन्मार्ग चिंतन-70

❖ **णाणं णेव अज्झणेणं, अणुभवेणं वड्ढेदि॥**

❖ ज्ञान पढ़ने से नहीं अनुभव से वृद्धिमान होता है।

सन्मार्ग चिंतन-71

- **पगे पगे हिंसा, जदि पमादो दु॥**
- पग-पग पर होती है हिंसा, यदि प्रमाद है तो।

सन्मार्ग चिंतन-72

- **णंतसुहं इच्छेसि, दु जीवेहि मज्झत्थत्तेण सह जीवणं॥**
- अनंत सुख चाहते हो, जीओ माध्यस्थता के साथ जीवन।

सन्मार्ग चिंतन-73

❖ **अवराहा गुप्पिऊणं कोवि वरेणो ण होदि, तम्हा अवराहा सोधेहि॥**

❖ गलतियाँ छिपाकर कोई भी अच्छा नहीं बनता, इसलिये गलतियों को सुधारो।

सन्मार्ग चिंतन-74

❖ **सिक्खिऊणं सुवयणाणि कुणेहि सगभवं वरेण्णं॥**

❖ सीखकर अच्छी बातें बनाओ अपना भव अच्छा।

सन्मार्ग चिंतन-75

- **जम्मेण कोवि सिक्खिदूण ण वि आगच्छेदि, तस्स पुरिसत्थो आवस्सगो॥**
- जन्म से कोई सीखकर नहीं आता, उसके लिये पुरुषार्थ जरूरी है।

सन्मार्ग चिंतन-76

- **अवत्था-दूसणम्हि तुमं वियलो ण होदु तेण तुमं वरेण्णो॥**
- हालात बिगड़ने पर आप बेहाल न हों तो आप श्रेष्ठ हैं।

सन्मार्ग चिंतन-77

❖ **णिब्बलदा तुम्हाण अंतसे होदि किण्णु दोसो तुमं अवरा देसि।।**

❖ कमज़ोरी आपके भीतर होती है, पर दोष आप दूसरों को देते हो।

सन्मार्ग चिंतन-78

❖ **तुम्हाण मणोरहो जदि सम्मं तु तुमं आवत्ती दु आगच्छेहिसि किण्णु मणोरह-पुण्णो अवस्सो हुज्जा।।**

❖ आपका लक्ष्य यदि सही है तो आपको अड़चनें तो आयेंगी, पर लक्ष्यपूर्ण जरूर होगा।

सन्मार्ग चिंतन-79

- **मुहम्हि लिहिदो होदि जीवो केहिंचि, तुमं तं पढणं सुसिक्ख॥**
- चेहरे पर लिखा होता है कि—व्यक्ति कैसा है आप उसे पढ़ना सीखें।

सन्मार्ग चिंतन-80

- **णाणादु वि बहु-महत्तं चारित्तं देहि, णवरि चारित्तमेव णाणमहत्तत्तं दस्सेदि॥**
- ज्ञान से भी अधिक महत्त्व आचरण को दें, क्योंकि आचरण ही ज्ञान की महत्त्वता दर्शाता है।

सन्मार्ग चिंतन-81

❖ **तुमं जं किंचिवि सेट्ठुं पढेहि तं जीवणे अप्पसादं करेहिसि दु जीवणं वरेण्णं होहिसि॥**

❖ आप जो कुछ भी अच्छा पढ़ते हो उसे जीवन में उतारोगे तो जीवन अच्छा होगा।

सन्मार्ग चिंतन-82

❖ **तुम्हाण चलण-चरित्तं वरेण्णं तु भविस्से गमणं वरेण्णं॥**

❖ आपका चाल-चलन अच्छा है तो भविष्य में गमन अच्छा है।

सन्मार्ग चिंतन-83

❖ **असंतुट्ठी जीवणे तदा आगमेदि, जदा तुमं अवराणं संतोसिद-जीवणेणं संजलेदि॥**

❖ असंतोष जीवन में तब आता है, जब आप दूसरों के संतोषित जीवन से जलते हो।

सन्मार्ग चिंतन-84

❖ **अवराण आहीणदाए हीणत्तं जम्मेदि, तम्हा णिवसेहि साहीणो॥**

❖ दूसरों के आधीन रहने से हीनता जन्म लेती है, इसलिये रहो स्वाधीन।

सन्मार्ग चिंतन-85

❖ **लहु-पावं पि गुरु-पावस्स रूवं होदि, इमादो सुरक्खेहि।।**

❖ थोड़ा-सा पाप भी बड़े पाप का रूप ले लेता है, बचो इससे।

सन्मार्ग चिंतन-86

❖ **सवणंतं सच्चं ति इमं आवस्सगं णत्थि, तुमं अणुहव-जुत्तीए य तस्स अहिणाणं कुणेहि।।**

❖ सुना हुआ सच हो यह जरूरी नहीं, आप अनुभव और युक्ति से उसकी पहचान करें।

सन्मार्ग चिंतन-87

- **उवएसगो दु हुज्जा किण्णु उवएसगं जाणित्तु॥**
- उपदेशक तो बनिये, पर उपदेशक को जानकर।

सन्मार्ग चिंतन-88

- **तुमं जा पस्सेसि, ते तुम्हाणं परिचिदा दु होंति; किण्णु तुमं णत्थि॥**
- आप जिन्हें देखते हो, वे आपके संबंधी तो हो सकते हैं; पर आप नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-89

❖ **जेण सव्वसुहं लब्भेदि ण दु कंचिद सुहं, तुमं तं कज्जं कुणेहि॥**

❖ जिससे किंचित् सुख नहीं सर्वसुख मिले आप वह कार्य करो।

सन्मार्ग चिंतन-90

❖ **को वि तुमए किंचिवि वुच्चेदि, किण्णु तुमं सहेहि, तदा तुमं हि सज्जणो॥**

❖ कोई आपसे कुछ भी कहे, पर आप सहना सीख लो तो आप ही साधु पुरुष हो।

सन्मार्ग चिंतन-91

- **तुमं सज्जणो अहवा णो, इमस्स णिण्णयं णो कोवि अवरो, तुममेव करिस्ससि॥**
- आप सज्जन हो या नहीं इसका निर्णय कोई दूसरा नहीं, आप ही कर पाओगे।

सन्मार्ग चिंतन-92

- **अण्णाणी आचरेदि सगाणुसारेण, किण्णु णाणी आगमेण॥**
- अज्ञानी चलता है स्वयं के अनुसार, पर ज्ञानी आगम के अनुसार।

सन्मार्ग चिंतन-93

❖ **कम्ममलादु पुहं इच्छेसि, दु सगेण हि मेलणं कुणेधि॥**

❖ दूर करना चाहते हो कर्म मैल, तो करो स्वयं से ही मेल।

सन्मार्ग चिंतन-94

❖ **धणसंचयस्स राए मा विसरेसु, णाणी! सगधणं॥**

❖ धन संचय के राग में मत खो देना, ज्ञानी! स्वधन को।

सन्मार्ग चिंतन-95

- ❖ **तुमं कस्सचिदवि किंचिवि ण करेसि, सव्वं जहाभग्गं होदि॥**
- ❖ आप किसी के लिये कुछ भी नहीं कर सकते, सब कुछ भाग्यानुसार होता है।

सन्मार्ग चिंतन-96

- ❖ **आदरामो णामेणं हि उव्वेलिदो त्ति॥**
- ❖ नाम के कारण ही हो जाता है उद्वेलित आत्मराम।

सन्मार्ग चिंतन-97

- ❖ **भोगं दु पउरं किदो, अदु धारेसु जोगं॥**
- ❖ भोग तो बहुत किया, अब धारण कर योग।

सन्मार्ग चिंतन-98

- ❖ **एयंतठाणे चिट्ठिय तदा मुच्चिस्ससि, जदा जाणिस्ससि तुमं मेत्तं णियप्पदेवं॥**
- ❖ एकांत स्थान में बैठकर मुक्ति तभी मिलेगी, जब जानोगे आप केवल निजात्मदेव को।

सन्मार्ग चिंतन-99

❖ **कुलीणत्तस्स बोहो जीवस्स चरिया-चरिचाए होदि॥**

❖ कुलीनता का बोध व्यक्ति की चर्या और चर्चा कराती है।

सन्मार्ग चिंतन-100

❖ **जदि वण-भवणे वसेदूणं अंतो विसुद्धि-पवणं विज्जमाणं, तु मुत्तिभवणलाहं होहिदि॥**

❖ वन और भवन में रहकर यदि चले अंदर विशुद्धि की पवन, तो मिले तुझे मुक्तिभवन।

सन्मार्ग चिंतन-101

❖ **अवरत्तो पुहुत्तं वड्ढेहि, तदा पहुप्पेहिसि णियसमीपे॥**

❖ दूरियाँ बढ़ाओ पर से तभी तो पहुँचोगे निज के पास।

सन्मार्ग चिंतन-102

❖ **विकिदी सगादो आगच्छेदि, ण दु अवरादो॥**

❖ विकृति पर के कारण नहीं, स्वयं के कारण आती है।

सन्मार्ग चिंतन-103

- **अज्जपज्जंतं अवरेणं जोयणं विजाणीअ, तम्हा दु णियादो जोयणं हि णत्थि॥**
- जुड़ना जानते आये आज तक पर से, इसीलिये तो निज से जुड़े ही नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-104

- **कलुसिद-भावादो दिस्सेदि कालो-कलुसिदो॥**
- खोटे परिणाम होने के कारण दिखता है काल खोटा।

सन्मार्ग चिंतन-105

❖ **वित्थारं जाणेसि दु संवेल्लं पि सुसिक्ख॥**

❖ फैलाना जानते हो तो समेटना भी सीखो।

सन्मार्ग चिंतन-106

❖ **दोसकरणं जाणेसि दु दोस-उण्णयणं पि सिक्ख॥**

❖ गलतियाँ करना जानते हो तो सुधारना भी तो सीखो।

सन्मार्ग चिंतन-107

- **णिप्पहभाव-पहाणत्तं तु होहिदि मोक्खमग्गो पसत्थो।।**
- निस्पृह भावों की प्रधानता हो तो होगा मोक्षमार्ग प्रशस्त।

सन्मार्ग चिंतन-108

- **जुद्धकरणं सिक्ख, किण्णु कम्मेहिं सह ण दु जीवेहिं।।**
- युद्ध करना सीखो, पर लोगों के साथ नहीं कर्मों के साथ।

सन्मार्ग चिंतन-109

❖ **णाण-विगासवंतो हि सपरपगासगो॥**

❖ ज्ञान को विकसित करनेवाला ही बनता है स्व-पर प्रकाशक।

सन्मार्ग चिंतन-110

❖ **सयेहि विसयाणं, जग्गेहि संजमट्ठं॥**

❖ जागना संयम के लिये, विषयों के लिये सो जाना।

सन्मार्ग चिंतन-111

- **सोचेव णादो, जो जाणित्तु पावं ण कुणेदि॥**
- जानकार वही है जो जानकर पाप न करे।

सन्मार्ग चिंतन-112

- **कुव्व कम्माणं विच्छेदं ण दु अवर-धम्मस्स॥**
- विच्छेद करना कर्मों का, दूसरों के धर्म का नहीं।।

सन्मार्ग चिंतन-113

❖ **कुण पसंसं अवराणं, सा एव तुमं पसंसगो कुव्वेहिसि॥**

❖ बढ़ाई करना दूसरों की, वही तुझे प्रशंसक बनायेगी।

सन्मार्ग चिंतन-114

❖ **पस्स—भद्दत्तं अवरेसुं, तमेव तुम्हाण दुव्वित्ताणि ओसारिहिध॥**

❖ अच्छाई देखना दूसरों में, वही तेरी बुराइयाँ हटायेंगी।

सन्मार्ग चिंतन-115

- ❖ **ण वि वड्ढेदि को वि धम्मं, धम्मादु उक्कमेदे॥**
- ❖ धर्म को कोई बढ़ाता नहीं, धर्म से बढ़ा जाता है।

सन्मार्ग चिंतन-116

- ❖ **सेट्ठत्तं जेट्ठत्तेण णत्थि सेट्ठकज्जेण हि आगच्छेहिदि॥**
- ❖ श्रेष्ठता ज्येष्ठता से नहीं, श्रेष्ठ कार्य करने से ही आयेगी।

सन्मार्ग चिंतन-117

❖ **अवरा सगीयो मण्णित्तु मा अणुकहेहि पुरादण-दोसं॥**

❖ अपना मानकर दूसरों को, मत दोहराओ पुरानी भूल।

सन्मार्ग चिंतन-118

❖ **तुम्हाण संजमिद-जीवणं हि तुमं पुज्जणिज्जं कुव्वेहिसि॥**

❖ आपका संयमित जीवन ही आपको पूज्यनीय बनायेगी।

सन्मार्ग चिंतन-119

- **सव्वेसिं तुम्हाण देहेणं रज्जंति ण तु चेदणेण, जग्ग चेदण।।**
- सभी तेरे तन से राग करते हैं चेतन से नहीं, जागो चेतन।

सन्मार्ग चिंतन-120

- **हुव णादो पत्तेग-ठिदीए एवं संभलेहि, जओ कोवि ण जाणेदि कदा का ठिदी संमुहे आगच्छेदि।।**
- हर स्थिति के जानकार बनो और सँभलो, क्योंकि कोई नहीं जानता है, कब कौन-सी स्थिति सामने आ जाये।

सन्मार्ग चिंतन-121

- **पत्तेग-वत्थुं णाण-विसयं करेहि, तम्हि णो अवगाहेहि, अण्णहा बंधो बज्झेहिदि॥**
- हर वस्तु को ज्ञान का विषय बनाओ, उसमें जाओ नहीं अन्यथा बंध बंधेगा।

सन्मार्ग चिंतन-122

- **गुण-अवगुणाणं चरिचा होदि, जो सेट्ठो तं गेण्हेहि॥**
- गुण और अवगुण दोनों की चर्चा होती है, जो श्रेष्ठ हो उसे स्वीकारो।

सन्मार्ग चिंतन-123

- **संगेण सह कम्मं हि गच्छेदि, सहचरंतो णत्थि॥**
- साथ रहनेवाला भी साथ नहीं जाता है, साथ जाता है केवल कर्म।

सन्मार्ग चिंतन-124

- **जदा तुमं सगसमीवे आगच्छेसि, पुण दूरंता वि समीवे आगच्छेंति॥**
- दूर रहनेवाले भी पास में आ जाते हैं, जब आप निज के पास जाते हैं।

सन्मार्ग चिंतन-125

❖ **समीवे वसंता वि दूरं गच्छंति, जदा तुमं अप्पादो दूरं गच्छेसि॥**

❖ पास रहनेवाले भी दूर चले जाते हैं, जब आप निज से दूर जाते हैं।

सन्मार्ग चिंतन-126

❖ **जस्स मुहे तुम्हाण णामं होदु पुण इमो आवस्सगो णत्थि तुमं तस्स हिदये वि होहि॥**

❖ जिसके मुख पर आपका नाम आये तो यह जरूरी नहीं कि—आप उसके हृदय में भी हों।

सन्मार्ग चिंतन-127

❖ **णिमज्जेहि णियप्पचिंतणम्हि ण दु अवरचिंतणम्हि॥**

❖ पर के चिंतन में नहीं, स्वात्म-चिंतन में डूबो।

सन्मार्ग चिंतन-128

❖ **अवर-आहावं मण्णेहि विसहर-फुक्कारं, जओ तं तुमं णियप्पादु विच्छुहेदि॥**

❖ पर की पुकार को मानो सर्प की फुंकार, क्योंकि वह तुझे निज से दूर करती हैं।

सन्मार्ग चिंतन-129

❖ **पस्सेहि अहो अहवा उवरिं, णं मज्झे विगारा संति॥**

❖ नीचे देखो या फिर ऊपर, क्योंकि मध्य में विकार हैं।

सन्मार्ग चिंतन-130

❖ **मज्झ-अवत्था उत्तंभस्स अत्थि, तं मा विट्टालेहि॥**

❖ मध्य अवस्था सँभलने की है, मत बिगाड़ो उसे।

सन्मार्ग चिंतन-131

- ❖ **कसायुज्झणेणं होहिदि पुण्णज्जणं॥**
- ❖ पुण्य का अर्जन कषायों के विसर्जन से होगा।

सन्मार्ग चिंतन-132

- ❖ **तस्सेव जीवणं णिगिट्ठं, जस्स अंतो विगारा संति॥**
- ❖ जीवन बेकार उसी का होता है जिसके भीतर हैं विकार।

सन्मार्ग चिंतन-133

❖ **तस्सेव जीवणे उण्णयणं आगमेदि जो णिव्विगारो होदि॥**

❖ जीवन में आता है निखार उसी के, जो होता है निर्विकार।

सन्मार्ग चिंतन-134

❖ **सगीय-करणत्थं अवरा, कुव्व सगीय-सरिच्छं ववहारं॥**

❖ दूसरों को अपना बनाने के लिये, करो अपने जैसा व्यवहार।

सन्मार्ग चिंतन-135

❖ **णिएण णिए गमणट्ठं कत्थ वि मा गच्छ, णियसमीवे आगच्छ॥**

❖ स्वयं से स्वयं में जाने के लिये कहीं भी मत जाईये, स्वयं के पास आईये।

सन्मार्ग चिंतन-136

❖ **तुम्हाण वयणाइं ता खु रुच्चेहिंति, जे तुमं रुच्चंति॥**

❖ आपकी बातें उन्हीं को अच्छी लगेंगी, जो आपको पसंद करते हैं।

सन्मार्ग चिंतन-137

❖ **जीवा तुमं परिवट्टेंतु, तादो पुव्विं तुमं हि परिवट्टेसु॥**

❖ लोग आपको बदलें, उससे पहले आप ही बदल जाओ।

सन्मार्ग चिंतन-138

❖ **रसं मा अहिहर विसएसुं, अण्णहा दुक्खं हि पत्तेहिसि॥**

❖ मत लो रस विषयों में, अन्यथा दुःख ही मिलेगा।

सन्मार्ग चिंतन-139

- **आदसुहस्स वंछा, दु मा पेह केणचिदवि किंचिवि॥**
- आत्मसुख की वांछा है तो मत चाहो किसी से कुछ भी।

सन्मार्ग चिंतन-140

- **कुव्वेहि कत्तव्वपालणं तु किण्णु मा रक्खेधि कत्तत्तभावं॥**
- कर्त्तव्य का पालन तो करो, पर कर्तृत्व भाव मत रखो।

सन्मार्ग चिंतन-141

❖ **वीसे वसिदूणं पि सव्वदो पुहं हुव, पापुण्णेहिसि परिपुण्ण-सुहं॥**

❖ संसार में रहकर भी रहो सबसे दूर, मिलेगा सुख भरपूर।

सन्मार्ग चिंतन-142

❖ **कामणा-वासणादु पुहं होऊणं भावणं भावेहि, णिए रमणं हं कदा करिहिमो॥**

❖ कामना वासना से दूर होकर भाओ भावना कब करूँगा मैं निज में रमण।

सन्मार्ग चिंतन-143

- **वेरग्ग-बीयं हि उवलद्धेहिसि तुमं सासय-सुहं॥**
- वैराग्य की संतान ही दिलायेगी तुझे शाश्वत सुख।।

सन्मार्ग चिंतन-144

- **अमुत्तप्पा अप्प-संवेयणं कुणेदु दु सो होइ मुत्तप्पा॥**
- संसारी संवेदन करे निज का तो होता वह संसार से अतीत।

सन्मार्ग चिंतन-145

❖ **अप्प-संमदिं होइ तदा दु गंतेदि विसयेसु चित्तं॥**

❖ सम्मति स्वयं की होता है तभी तो जाता है विषयों में चित्त।

सन्मार्ग चिंतन-146

❖ **विसुद्ध-भावेहिं होइ सयलणाणलाहं॥**

❖ परिपूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होती है विशुद्ध परिणामों से।

सन्मार्ग चिंतन-147

- **मा कुव्वेहि पज्जालोयणं कंचिदवि संतावणस्स, अवित्त कुव्वेहि णिए अवगमणस्स।।**
- पर्यालोचन मत करो किसी को भी सताने का, अपितु करो निज में जाने का।

सन्मार्ग चिंतन-148

- **उस्साहेणं किदा साहणा हि कारेदि सज्झलाहं।।**
- उत्साह से की गई साधना की कराती है प्राप्त साध्य को।

सन्मार्ग चिंतन-149

- **आदविज्जा विस्सेसो किण्णु विज्जा विसेसो कीरेदि॥**
- विद्या विशेष बनाती है पर आत्मविद्या विश्वेश बनाती है।

सन्मार्ग चिंतन-150

- **जदा अगंधप्पा हि साहणं करेदि, दु पसरेदि सव्वत्थ जस-सुगंधो॥**
- जब गंध रहित आत्मा ही करती है, साधना तो फैलती है सर्वत्र यश की सुगंध।

सन्मार्ग चिंतन-151

- **आदबंभे गमणट्ठं वोस्सरेहिह तुमं सयलभंतिं॥**
- आत्मब्रह्म में जाने के लिये छोड़ना होंगे तुझे सारे भ्रम।

सन्मार्ग चिंतन-152

- **ण वि वियारेहि सुहकरणट्ठं, तं तु करिज्जदे॥**
- सोचना नहीं पड़ता शुभ करने के लिये वह तो किया जाता है।

सन्मार्ग चिंतन-153

❖ **कुव्व सुहं, असुहं ण विचिंतेहि॥**

❖ करो शुभ, अशुभ सोचना भी नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-154

❖ **तुमं कोवि अवरो णत्थि, तुज्झ मणं खु ठिव्वेसि॥**

❖ तेरा मन ही मोड़ता है तुझे कोई दूसरा नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-155

- **पडिसमयं सुमरेहि—कोवि कस्सचिदवि सकुल्लो णत्थि॥**
- हर वक्त याद रखें—कोई भी किसी का सगा नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-156

- **भावणिम्मलत्तेणं होइ धम्मप्पा-अहिणाणं, ण दु वत्थ-णिम्मलत्तेणं॥**
- धर्मात्मा की पहचान वस्त्रों की स्वच्छता से नहीं, परिणामों की स्वच्छता से होती है।

सन्मार्ग चिंतन-157

❖ **तुम्हाणं भावेसुं हि आहीणो तुम्हाण भवो ता सोधेह॥**

❖ आपका भव आपके ही भावों पर निर्भर है सुधारो उन्हें।

सन्मार्ग चिंतन-158

❖ **भत्तीए भग्गस्स उण्णयणं एवं सत्ति-वएण णासो य॥**

❖ किस्मत सुधरती है भक्ति करने से और बिगड़ती है शक्ति व्यय करने से।

सन्मार्ग चिंतन-159

❖ **दुट्ठकम्मस्स फलं दुट्ठं, परिअट्टेहि णियप्पदिट्ठिं॥**

❖ बुरे कर्म का नतीज़ा बुरा ही होता है, बदलो अपने नज़रिये को।

सन्मार्ग चिंतन-160

❖ **तुमं सयं तु परिअट्टेसु, किण्णु मा कुव्वेहि अवर-परिवट्टणस्स पयासं, सो सयमेव परिअट्टेहिदि॥**

❖ आप स्वयं तो बदलो, पर दूसरे को बदलने का प्रयास मत करो, वह स्वयं ही बदलेगा।

सन्मार्ग चिंतन-161

❖ **वेसो दरिसेदि किं तुम्हाण जोग्गत्तं॥**

❖ लिबास बतला देता है आपकी लियाक़त क्या है।

सन्मार्ग चिंतन-162

❖ **सज्जणत्त-अहिणाणं लज्जाए ण दु सज्जाए॥**

❖ सज्जा से नहीं लज्जा से होती है सज्जनता की पहचान।।

सन्मार्ग चिंतन-163

❖ **लेहगो गहणीयो लिहेदि दु जीवण-अमुल्लं होहिदि॥**

❖ लिखनेवाला लखने योग्य लिखे तो जीवन अनमोल हो जाये।

सन्मार्ग चिंतन-164

❖ **जीवणे लालित्तं तदा हु आगच्छेहिदि, जदा चेदण्णादि-च्चेणं समत्त-रम्मीओ णिस्सरेंति॥**

❖ लालित्य जीवन में तब ही आयेगा, जब चैतन्य आदित्य से समत्व की किरणें निश्रित होगीं।

सन्मार्ग चिंतन-165

❖ **तुमए संमिलेत्तु मणुस्स-चित्तं पप्फुल्लेदु, ण दु अवसीदेदु॥**

❖ आपसे मिलकर लोगों का मन खिले, उन्हें खले ना।

सन्मार्ग चिंतन-166

❖ **जीवणं उत्तम-करणट्ठं, चापल्लं मुंचेहि॥**

❖ जीवन खरा बनाने के लिये, नखरा छोड़ो।

सन्मार्ग चिंतन-167

❖ **परामस्स-समाहाणं उल्लासो होदव्वो, ण दु विसादो॥**

❖ परामर्श का हल हर्ष होना चाहिये, विषाद नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-168

❖ **हुव तुमं आदपियो, ण दु कीडापियो॥**

❖ क्रीड़ाप्रिय नहीं, आप बनें आत्मप्रिय।

सन्मार्ग चिंतन-169

❖ **विसयादो उदासीणदा जीवं कारेदि सिद्धाणं मज्झे आसीणो॥**

❖ उदासीनता विषयों से जीव को कराती है सिद्धों की बीच आसीन।

सन्मार्ग चिंतन-170

❖ **विमदीए भावणाओ विवरीदाओ होंति, कुव्वेहि उवओगं सुमदीए॥**

❖ विमति से भावनायें विपरीत होती हैं, सुमति का प्रयोग करो।

सन्मार्ग चिंतन-171

- **जीवणे दिव्वत्त-लाहट्ठं, धारेहि दव्वदिट्ठिं॥**
- दिव्यता जीवन में लाने के लिये, लाओ द्रव्यदृष्टि।

सन्मार्ग चिंतन-172

- **सव्व-वावगो हवणट्ठं केवलं णिए विसप्पेहि॥**
- सर्वव्यापक बनने के लिये रहो केवल निज में व्याप्त।

सन्मार्ग चिंतन-173

❖ **विग्घ-कारगस्स वि विरोहं मा कुण, तं कम्माणि सयमेव विग्घं देहिंति॥**

❖ विघ्न करनेवाले का भी विरोध मत करो, कर्म उसे स्वयं ही विघ्न देंगे।

सन्मार्ग चिंतन-174

❖ **सग-वीसासेणं हि होहिसि सव्वदिट्ठा॥**

❖ सर्व द्रष्टा बनोगे स्वयं के विश्वास से।

सन्मार्ग चिंतन-175

- **अधम्म-सेवणेणं लहेदि अहम-गदी॥**
- अधर्म के सेवन से मिलती है अधम-गति।

सन्मार्ग चिंतन-176

- **धम्म-सेवणेणं लहेदि उत्तम-गदी॥**
- धर्म के सेवन से मिलती है उत्तम-गति।

सन्मार्ग चिंतन-177

❖ **संकप्पो गुरुआसीसेणं गेण्हेहि जेण साफल्लं सिग्घमेव लहेहिदि॥**

❖ प्रतिज्ञा गुरु आशीष से लो जिससे सफलता शीघ्र ही मिलती है।

सन्मार्ग चिंतन-178

❖ **कुण अवलोयणं वीसे सव्वाणं, किण्णु लोयणं सुद्धं धरेहि॥**

❖ अवलोकन करो जगत में सभी का, पर लोचन शुद्ध रखना।

सन्मार्ग चिंतन-179

- ❖ **विचित्त-चित्ताणि पस्सिदूणं होदि दूसिद-चित्तं॥**
- ❖ विचित्र चित्रों को देखकर होता है दूषित चित्र।

सन्मार्ग चिंतन-180

- ❖ **अविसंवादी-जिणवाणीए किंपि विवाद-ठाणं णत्थि॥**
- ❖ अविसंवादी जिणवाणी में विवाद का कोई स्थान नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-181

❖ **कुण तमेव वादं जेण विवादो णवि हुज्जा॥**

❖ करो वही वाद जिससे विवाद न हो।

सन्मार्ग चिंतन-182

❖ **इंदिय-विजेदा हि मोक्खमग्ग-णेदा॥**

❖ इंद्रिय-विजेता ही होता है मोक्षमार्ग का नेता।

सन्मार्ग चिंतन-183

- ❖ **विजादीएणं हि सुजादीयं देदि जीवो कट्ठं॥**
- ❖ विजातीय के कारण ही स्वजातीय को कष्ट देता है जीव।

सन्मार्ग चिंतन-184

- ❖ **तमेव संदेसं देहि जस्सिं संदेहो णत्थि॥**
- ❖ संदेश वही दो जिसमें संदेह न हो।

सन्मार्ग चिंतन-185

❖ **तं सव्वस्स-अप्पणं कुणेहि, जस्सिं तुम्हाण समप्पणं॥**

❖ सर्वस्व करो अर्पण उन्हीं को, जिन पर तुम्हारा समर्पण हो।

सन्मार्ग चिंतन-186

❖ **तत्थेव वियरणं कुणेहि जत्थ करण-चरणे उण्णयणं॥**

❖ विचरण वहीं करें जहाँ करण और चरण में सुधार हो।

सन्मार्ग चिंतन-187

- ❖ **उक्करिसट्टं उक्किट्ठ-पुरिसत्थ-भावं च धारेहि॥**
- ❖ उत्कर्ष के लिये उत्कृष्ट पुरुषार्थ और परिणाम रखो।

सन्मार्ग चिंतन-188

- ❖ **गुंफेहि जिणमंदिरं णेव माण-मंदिरं॥**
- ❖ मान मंदिर नहीं जिन मंदिर बनाओ।

सन्मार्ग चिंतन-189

❖ **विसधारी वि विसं मुंचेउ, एसो वेसधारी हुवेहि॥**

❖ विषधारी भी विष छोड़ दे ऐसे वेशधारी बनना।

सन्मार्ग चिंतन-190

❖ **सुद्ध-परिधाणेण सह सुद्ध-परिणामं पि धारेहि॥**

❖ शुद्ध-परिधान के साथ शुद्ध-परिणाम भी रखो।

सन्मार्ग चिंतन-191

- **कुणेहि पहुदंसणं अप्प-दंसणट्ठं, ण दु पदंसणट्ठं॥**
- प्रभुदर्शन प्रदर्शन के लिये नहीं, आत्मदर्शन के लिये करो।

सन्मार्ग चिंतन-192

- **अम्हो जाणेमु ता एव, जो अम्हाण णत्थि॥**
- हम जानते रहे उन्हें ही, जो हमारे नहीं।

सन्मार्ग चिंतन-193

❖ **तमेव पस्सेहि जं दंसणीयं, अण्णहा जीवाणं दिट्ठीए ऊसरेहिसि॥**

❖ देखो उसे ही जो देखने योग्य हो, अन्यथा लोगों की दृष्टि से ओझल हो जाओगे।

सन्मार्ग चिंतन-194

❖ **लज्जासीलो तत्तो किरियत्तो ऊसरेदि, जत्तो लज्जा णस्सेदि॥**

❖ लज्जाशील प्राणी उन क्रियाओं से सदा दूर रहता है, जिससे लज्जा समाप्त होती है।

सन्मार्ग चिंतन-195

❖ **सोचेव हुवेदि वीसमित्तं जो वीसत्थो॥**

❖ विश्व का मित्र वही बनता है जो विश्वस्त होता है।

सन्मार्ग चिंतन-196

❖ **भवणणिम्माणकला सव्वे सेहंति, किण्णु जेण्हधम्मो सिद्धणिम्माण-कला सेहेदि॥**

❖ भवननिर्माण कला सभी सिखाते हैं, किन्तु जैनधर्म सिद्ध निर्माणकला सिखाता है।

सन्मार्ग चिंतन-195

❖ **पज्जायबुद्धी जीवस्स बुद्धिं कुंठिदं करेदि॥**

❖ पर्यायबुद्धि जीव की बुद्धि को कुण्ठित करती है।

सन्मार्ग चिंतन-196

❖ **सक्किद-भासाए सह सक्किद-परिणामा वि धारेहि॥**

❖ संस्कृत भाषा ही नहीं, संस्कृत परिणाम भी रखना सीखो।

सन्मार्ग चिंतन-197

❖ **अजोग्ग-वत्थु-दंसणादो हि दिट्ठिकोणं परिवट्टेदि॥**

❖ अयोग्य वस्तु पर नज़र जाते ही नज़रिया बदल जाता है।

सन्मार्ग चिंतन-198

❖ **वित्ते चित्तं गच्छेहिदि दु णियसंपत्ती छुट्टेहिदि॥**

❖ वित्त पर चित्त जायेगा तो निज की संपत्ति छूट जायेगी।

सन्मार्ग चिंतन-199

❖ **विगिदिं दूर-करणेणं हि होहिदि सिद्धसरिसा गदी॥**

❖ विकृति को दूर करने से ही होगी सिद्धों-सी गति।

सन्मार्ग चिंतन-200

❖ **सच्चं तुम्हाण समीवे, तुमं असच्चे हि सच्चस्स अण्णेसणं करेसि॥**

❖ सत्य आपके पास में है और आप असत्य में ही सत्य की खोज कर रहे हो।

सन्मार्ग चिंतन-201

- ❖ **कलहकारी परामस्सेणं को वि लाहो णत्थि, सग-परस्स हाणी हि अत्थि॥**
- ❖ कलहकारी सलाह से कोई लाभ नहीं, स्व पर का नुकसान ही है।

सन्मार्ग चिंतन-202

- ❖ **अवरेसुं विजयस्स अवेक्खा तुमं णिए विजयं पत्तेहि॥**
- ❖ दूसरों पर विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आप स्वयं विजय करो।

सन्मार्ग चिंतन-203

❖ **कत्तित्तं मुंचिदूण कत्तव्व-पालणं कुणेहि दु सव्वत्थ जसो वड्ढेहिसि।**

❖ कर्त्तृत्व छोड़कर कर्त्तव्य का पालन करो तो सर्वत्र यश में वृद्धि मिलेगी।

सन्मार्ग चिंतन-204

❖ **''हं किदो'' एत्थ दिट्ठी ण वि विरमिदूणं, ''मए किं किदं'' इमम्मि दिट्ठिं कुणेहि।।**

❖ मैंने किया पर दृष्टि न ले जाकर, मैंने क्या किया है इस पर दृष्टि ले जाओ।

सन्मार्ग चिंतन-205

- **कुण वीसासं वीसो परिवट्टेहिदि पढमो तुमं सयं परिवट्टेहि॥**
- विश्वास रखो दुनिया बदलेगी पहले आप स्वयं बदल जाओ।

सन्मार्ग चिंतन-206

- **उवरोहगो तुमं सयं हि कोवि अण्णो णत्थि॥**
- घेरा डालनेवाला कोई और नहीं आप स्वयं ही हैं।

सन्मार्ग चिंतन-207

❖ **तत्थ गच्छेहि तुमं सयं, जत्थ वीसादु पुणो वीसे णावि आगच्छेज्जा॥**

❖ ले जाना आप स्वयं को वहाँ, जहाँ जहाँ से पुनः जहाँ में न आना पड़े।

सन्मार्ग चिंतन-208

❖ **दुट्ठाइं ठाणाइं णत्थि, दुट्ठा परिणामा हुंति ता संवड्ढणं सिक्ख॥**

❖ बुरे स्थान नहीं; बुरे परिणाम होते हैं, सँभालना सीखो उन्हें।

सन्मार्ग चिंतन-209

- **जा सव्वस्स अणुऊलं तमेव चरिचं कुव्वेहि अण्णहा मोउणं हुज्जा॥**
- जो सभी के अनुकूल हो वही चर्चा करना अन्यथा मौन हो जाना।

सन्मार्ग चिंतन-210

- **उत्ती तुम्हाण जुत्तीए जुत्ता दु गहणिज्जा॥**
- उक्ति आपकी युक्ति से युक्त है, तो स्वीकार की जायेगी।